राजभाषा दर्पण

वर्ष : 2024 * त्रैमासिक * अंक : 2

दक्षिण पूर्व रेलवे

चक्रधरपुर मंडल

हिंदी साहित्यकार फादर कामिल बुल्के

बेल्जियम की धरती पर पैदा होने वाला कोई शख्स हिंदी को अपनी मां माने और भगवान राम को अपना आदर्श ..... तो सहसा यह विश्वास कर पाना आसान नहीं होता, लेकिन यह सत्य है कि फादर बुल्के ने हिंदी और भारतीय संस्कृति के लिए अपना जीवन खपा दिया।

फादर कामिल बुल्के का जन्म बेल्जियम में 1 सितंबर, 1909 में हुआ था। इंजीनियरी में डिग्री प्राप्त बुल्के 1935 में भारत आए और कुछ समय दार्जिलिंग में रहने के बाद वे गुमला में गणित विषय का अध्यापन करने लगे। इसके बाद, उनकी कर्मस्थली वर्तमान झारखण्ड की राजधानी रांची हो गई। 1940 में उन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से संस्कृत में विशारद और 1944 में कोलकाता से संस्कृत में ही एम.ए. किया। इसके बाद 1949 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने 'रामकथा की उत्पत्ति और विकास' विषय पर पी.एच. डी. की। बुल्के ने हिंदी प्रेम के कारण अपनी पी.एच.डी. थीसिस हिंदी में ही लिखी, जबकि, उन दिनों सभी विषयों की थीसिस अंग्रेजी में ही लिखी जाती थी। इस थीसिस को बाद में पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक में रामायण का बड़ा प्रैक्टिकल विवरण है, जो किसी के दिल को छू जाए। रामचरित मानस ने उन्हें इतना ज्यादा प्रभावित किया था कि भारत आकर रामकथा को पढ़ने एवं भगवान राम को जानने के लिए उन्होंने अवधी एवं ब्रज भाषा सीखी। वर्ष 1951 में उन्हें ससम्मान भारत की नागरिकता प्रदान की गई। रामकथा पर प्रामाणिक शोध के लिए भारत सरकार ने उन्हें केन्द्रीय हिंदी समिति का सदस्य बनाया था। वे 1950 से 1977 तक संत जेवियर कॉलेज, राँची के हिंदी–संस्कृत के विभागाध्यक्ष रहे। 1955 में उन्होंने ए टेक्निकल इंग्लिश–हिंदी ग्लॉसरी का प्रकाशन किया। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'रामकथा, उत्पत्ति और विकास', 'अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश', 'मुक्तिदाता', 'नया विधान', 'हिंदी–अंग्रेजी लघुकोश', 'बाइबिल' (हिंदी अनुवाद) एवं 'संत लुकस के अनुसार यीशु ख्रीस्त का पवित्र सुसमाचार' आदि शामिल हैं। उनका अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश सभी वर्गों के बीच सर्वाधिक लोकप्रिय शब्दकोश है। उनके द्वारा तैयार किया गया यह शब्दकोश आज भी प्रमाणिकता और उपयोगिता की दृष्टि से श्रेष्ट माना जाता है। रामकथा के महत्व को लेकर फादर बुल्के ने वर्षों शोध किया और देश–विदेश में रामकथा के प्रसार पर प्रमाणिक तथ्य जुटाए। उन्होंने पूरी दुनिया में रामायण के करीब 300 रूपों की पहचान की थी। यदि सच कहा जाए तो रामकथा पर विधिवत पहला शोध कार्य फादर बुल्के ने ही किया था। हिंदी साहित्य एवं संस्कृति के लिए समर्पित फादर बुल्के को 1974 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

फादर बुल्के ने एक जगह लिखा है कि – 'मातृभाषा प्रेम का संस्कार लेकर मैं वर्ष 1935 में राँची पहुंचा और मुझे यह देखकर दुःख हुआ कि भारत में न केवल अंग्रेजों का राज है, बल्कि, अंग्रेजी का भी बोलबाला है। मेरे देश की भांति उत्तर भारत का मध्य वर्ग भी अपनी मातृभाषा की अपेक्षा एक विदेशी भाषा को अधिक महत्व देता है। इसके प्रतिक्रिया स्वरूप मैंने हिंदी पण्डित बनने का निश्चय किया। कॉलेज मंच पर भाषण देते हुए उन्होंने कहा था– 'संस्कृत राजमाता है, हिंदी बहूरानी है और अंग्रेजी नौकरानी है'। तुलसीदास के अनन्य प्रशंसक और हिंदी के प्रति पूर्ण समर्पित विलक्षण साहित्यानुरागी महर्षि फादर कामिल बुल्के 17 अगस्त, 1982 को हमेशा के लिए इस संसार से विदा हो गए।

****

गोपाल सिहं नेपाली

प्रसिद्ध कवि और साहित्यकार गोपाल सिंह नेपाली का जन्म 11 अगस्त, 1911 को बिहार के बेतिया में हुआ था। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। कविता के अतिरिक्त उन्होंने कई पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया एवं फिल्मों के गीत भी लिखे। उन्होंने देश–प्रेम, प्रकृति–प्रेम तथा मानवीय भावनाओं एवं संवेदनाओं का बड़ा ही सुंदर चित्रण किया है। उन्हें गीतों का राजकुमार भी कहा जाता है। उनकी प्रमुख कृतियों में 'उमंग', 'पंक्षी', 'रागिनी', 'पंचमी', 'नवीन', 'नीलिमा' एवं 'हिमालय ने पुकारा' शामिल हैं।

उन्होंने 'प्रभात' और 'मुरली' नाम से हस्तलिखित पत्रिका भी निकाली। उनकी रचनाओं में देशभक्ति का ज्वार देखते ही बनता है। 17 अप्रैल, 1963 को मात्र 52 वर्ष की अवस्था में ही उनका देहावसान हो गया।

****

नवीन कल्पना करो

-गोपाल सिंह नेपाली

निज राष्ट्र के शरीर के सिंगार के लिए
तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो,
तुम कल्पना करो।

अब देश है स्वतंत्र, मेदिनी स्वतंत्र है
मधुमास है स्वतंत्र, चाँदनी स्वतंत्र है
हर दीप है स्वतंत्र, रोशनी स्वतंत्र है
अब शक्ति की ज्वलंत दामिनी स्वतंत्र है

लेकर अनंत शक्तियाँ सद्य समृद्धि की–
तुम कामना करो, किशोर कामना करो,
तुम कल्पना करो।

तन की स्वतंत्रता चरित्र का निखार है
मन की स्वतंत्रता विचार की बहार है
घर की स्वतंत्रता समाज का सिंगार है
पर देश की स्वतंत्रता अमर पुकार है

टूटे कभी न तार यह अमर पुकार का–
तुम साधना करो, अनंत साधना करो,
तुम कल्पना करो।

हम थे अभी–अभी गुलाम, यह न भूलना
करना पड़ा हमें सलाम, यह न भूलना
रोते फिरे उमर तमाम, यह न भूलना
था फूट का मिला इनाम, वह न भूलना

बीती गुलामियाँ, न लौट आएँ फिर कभी
तुम भावना करो, स्वतंत्र भावना करो
तुम कल्पना करो।

****

अधिकारियों द्वारा फाइलों पर सामान्यतः दिए जाने वाले पृष्ठांकन के नमूने

Approved/Draft approved	अनुमोदित / मसौदा अनुमोदित	Explanation may be called for	स्पष्टीकरण मांगा जाए
Approved as recommended	सिफारिश के अनुसार अनुमोदित	Eligibility	पात्रता
Await reply	उत्तर की प्रतीक्षा करें	Extension of currency	पद की अवधि बढ़ाना
Action may be taken as proposed	प्रस्ताव के अनुसार कार्रवाई की जाए	Financial Concurrence	वित्तीय सहमति
Against the rules	नियम के विरूद्ध	Final Settlement of dues	बकाए का अंतिम भुगतान
Ask for clarification	स्पष्टीकरण मांगा जाए	For approval/ Sanction	अनुमोदन / मंजूरी के लिए
Accept for payment	भुगतान के लिए स्वीकार किया जाए	Funds are available	निधि उपलब्ध है
Action may be taken accordingly	तदनुसार कार्रवाई की जाए	For information and necessary action please	सूचना और आवश्यक कार्रवाई के लिए
As far as possible	यथा संभव	Give details	विस्तृत विवरण दें
Absconding from duty	ड्यूटी से लापता	Hard and Fast rules	पक्के नियम
After discussion	विचार-विमर्श के बाद	Has not been received	प्राप्त नही हुआ है
As proposed	प्रस्ताव के अनुसार	Held in Abeyance	आस्थगित रखा गया
Adjourned sine die	अनिश्चित काल के लिए स्थगित	Half yearly returns	अर्द्धवार्षिक विवरण
Ban on creation of post	पद के सृजन पर रोक	I agree	मैं सहमत हूं
Call for an explanation	स्पष्टीकरण मांगा जाए	Immediate action please	कृपया शीघ्र कार्रवाई करें
Case may be closed	मामला बंद कर दिया जाए	Inform all concerned	सर्व संबंधित को सूचित किया जाए
Can not be accepted	स्वीकार नहीं किया जा सकता है	Important papers	महत्वपूर्ण पेपर
Charge Sheet	आरोप पत्र	Issue as amended	यथासंशोधित जारी करें
Compliance Report	अनुपालन रिपोर्ट	In connection with	के संबंध में
Case is under consideration	मामला विचाराधीन है	In addition to that	उसके अतिरिक्त
Classification of posts	पदों का वर्गीकरण	Issue reminder	अनुस्मारक जारी करें
Delay is regretted	विलंब के लिए खेद है	justification of the post	पद का औचित्य
Disciplinary Action	अनुशासनिक कार्रवाई	Keep pending	रोक रखें / रोके रखें
Discuss with papers/File	पेपर/फाइल के साथ विचार विमर्श करें	Local purchase	स्थानीय खरीद
Distribution	वितरण	May be informed accordingly	तदनुसार सूचित किया जाए
Draft for approval	मसौदा अनुमोदनार्थ प्रस्तुत	May be issued	जारी किया जाए
Early action is solicited	शीघ्र कार्रवाई अपेक्षित है	May be returned	कृपया लौटाएं / कृपया वापस करें
Existing Vacancy	वर्तमान रिक्ति	May please see	कृपया मिलें
Expedite Action	शीघ्र कार्रवाई करें		

दक्षिण भारत में हिन्दी साहित्य के प्रचारक

दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार–प्रसार का इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण रहा है। आंध्र में हिन्दी लेखन की परंपरा एवं विकास के संबंध में डॉ भीमसेन निर्मल लिखते हैं कि "दक्षिण भारत में हिन्दी को समृद्ध एवं उन्नत बनाने के लिए मध्ययुग में ही आंध्रप्रदेश के रचनाकार हिन्दी भाषा में साहित्यिक सृजन का काम करने लगे थे। मध्ययुगीन इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि हिन्दी लेखन की परंपरा आंध्र के लिए नई नहीं है। इस दिशा में हिन्दी के राष्ट्रीय रूप खड़ीबोली के मूल स्त्रोत दक्खिनी का उल्लेख किया जा सकता है। दक्खिनी हिन्दी साहित्य का संबंध पुराने हैदराबाद राज्य तेलंगाना और कर्नाटक प्रान्तों में अधिक रहा है।" इसलिए यह कहा जा सकता है कि दक्षिण में हिन्दी लेखन की परंपरा का इतिहास बहुत पुराना है। दक्षिण भारत में हिन्दी के विकास और लेखन परंपरा को आगे बढ़ाने में अनेक साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया है। भारतीय नवजागरण से वर्तमान समय तक दक्षिण भारतीय साहित्यकारों ने हिन्दी भाषा एवं साहित्य की पुरजोर सेवा की।

श्री मोटूरि सत्यनारायण : स्वतंत्रता सेनानी रहे श्री मोटूरि सत्यनारायण का जन्म 2 फरवरी, 1902 को आंध्र प्रदेश में हुआ था। वे आंध्रप्रदेश एवं दक्षिण भारत के आधार स्तंभ हिन्दी प्रचारक थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार–प्रसार के आंदोलन में जितना सक्रिय योगदान दिया, उतना शायद दक्षिण भारत में किसी और व्यक्ति ने नहीं दिया होगा। इन्होंने हिन्दी के लिए अनेक पदों पर कार्य करते हुए जीवन भर अपनी सेवाएँ हिन्दी को दिया। वे महात्मा गांधी के बहुत ही विश्वसनीय थे। उन्होंने दक्षिण के साहित्य पर अनेक लेख लिखकर हिन्दी पाठकों को दक्षिण के साहित्य से परिचित कराया। उनके संपादन में 'हिन्दी विश्व कोश' दस भागों में निकला था।

नादेल्ला पुरुषोत्तम : श्री नादेल्ला पुरुषोत्तम कवि का जन्म 1863 ई० में कृष्णा जिले के सितारामपुरी नामक गाँव में हुआ था। इन्होंने 32 नाटक लिखे। नादेल्ला पुरुषोत्तम ने सिमतिनी चरित्र, भद्रायूरभ्युदय, कीर्तिमालिनी प्रदान, अपूर्व दांपत्य, अहल्या संक्रदनीम, रामदास चरित्र आदि नाटक हिन्दी में लिखकर हिन्दी भाषा और साहित्य में अपना योगदान दिया।

जंध्याल शिवन्न शास्त्री : शास्त्रीजी हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार व 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी के समकालीन थे। इन्होंने सरस्वती पत्रिका में अनेक लेख लिखे। खड़ी बोली के स्वरुप को सजाने में शास्त्री जी का सहयोग महावीर प्रसाद द्विवेदी जी को हमेशा मिलता रहता था। जंध्याल शिवन्न शास्त्री जी ने सर्वप्रथम तेलुगु–हिन्दी–कोश तथा व्याकरण आदि की रचना की। 'कालिदास' और 'भवभूति' नामक समालोचना एवं दुर्गादास नाटक को शास्त्री जी ने तेलुगु में अनुवाद कर आंध्र के लोगों को आकर्षित किया।

बालकृष्ण राव : श्री बालकृष्ण राव हिन्दी के प्रमुख कवि हुए जिनकी 'कौमुदी', 'आभास', 'कवि और छवि', 'राहबीती', 'हमारी राह', तथा 'अर्द्धरात्रि' जैसी रचनाएं बहुत प्रसिद्द हुईं। उन्होंने प्रसिद्ध पत्रिका कादम्बिनी का भी सम्पादन किया। ये हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रमुख समिति के सदस्य् रहे।

श्री वाराणसी राममूर्ति रेणु : श्री वाराणसी राममूर्ति रेणु जी तेलुगु भाषी होते हुए भी हिन्दी के उच्चकोटि के कवि, लेखक और अनुवादक थे। रेणु गुंटूर जिले के निवासी थे। इन्होंने काशी विश्वविद्यालय से हिन्दी में प्रथम श्रेणी से एम० ए० की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने हैदराबाद के आकाशवाणी विभाग में अपनी सेवाएँ दी। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– गीत विरह (काव्य संकलन), आदान–प्रदान (आलोचना)। इन्होंने आंध्र के कबीर श्री वेमना के व्यक्तित्व और कृतित्व की समीक्षा प्रस्तुत की है। तेलुगु के महान कवि जाषुआ द्वारा रचित 'गब्बिल' काव्य का 'चमगादड़' नाम से अनुवाद किया है।

अल्लूरि बैरागी : अल्लूरि बैरागी का जन्म 1924 में गुंटूरु जिले के तेनाली शहर के एक प्रतिष्ठित किसान परिवार में हुआ था। इन्होंने हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने 'चंदामामा' के संपादकीय विभाग में दो वर्षों तक कार्य किया। 1951 ई० में इन्होने 'पलायन' जैसी रचना लिखकर हिन्दी साहित्य जगत में खलबली मचा दी थी। इन्होंने पन्त और दिनकर जी के अनेक कविताओं का अनुवाद किया। इन्होंने तेलुगु की आधुनिक कविताओं का आधुनिक तेलुगु कविता के नाम से अनुवाद किया जिसमे लगभग 15 कविताएँ शामिल हैं।

ओरगंटि वेंकटेश्वर शर्मा : इन्होंने 'फ्रायड के चित्त विकलन' तथा 'भारतीय योग शास्त्रों के समन्वय' पर बड़ा विद्वतापूर्ण शोध–प्रबंध लिखकर काशी विद्यापीठ से 1929 में शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। पाल और ब्रंटन के अंग्रेजी ग्रंथ का 'गुप्त भारत की खोज' नाम से हिन्दी में अनुवाद किया। 'हिन्दी तेलुगु–कोश' तथा 'महर्षि रमणा की जीवनी' ग्रंथों में शर्मा जी ने अपनी शोधपरक दृष्टि का परिचय दिया।

लाजपति पिंगल : लाजपति पिंगल की खड़ीबोली में प्रथम काव्य ग्रंथ रचयिता के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त है। वे कृष्णा जिले के निवासी थे। उन्होंने अनेक वर्षों तक हिन्दी अध्ययन का कार्य किया और सन् 1929 ई० में 'भक्त रामदास' नामक प्रबंध काव्य का प्रणयन (पूरा करना) पहले ब्रजभाषा में और उसके बाद खड़ी बोली में किया।

चोडवरपु रामशेषय्या : चोडवरपु रामशेषय्या आंध्र प्रदेश के प्रसिद्ध नाटककार थे। इन्होंने अधिकतर पौराणिक और ऐतिहासिक नाटक लिखे हैं। 'सती कणणकी, इनका पौराणिक नाटक है। बोब्बिली, गृहिणी, मंत्री रामय्या, रानी मल्लम्मा उनके प्रसिद्ध नाटक है।

बोदराजु वेंकट सुब्बाराव : बोदराजु वेंकट सुब्बाराव का जन्म 1914 ई० में गुंटूरु जिले के स्वर्ण गाँव के एक संपन्न परिवार में हुआ था। बोदराजु वेंकट सुब्बाराव जी ने 'प्रणय' और 'मृणालिनी' नामक दो खण्ड–काव्यों की रचना की है। उनके दो काव्य–संग्रह 'रेशमी कुरता' और 'भारती श्री' प्रकाशित हुए है। इन दो काव्य ग्रंथों में कवि ने भारत की नवीन सभ्यता पर बड़ा ही व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।

प्रोफेसर जी शंकर रेड्डी : प्रोफेसर जी शंकर रेड्डी जी का जन्म आंध्र प्रदेश के नेल्लूर जिले के बत्तुलपल्लि गाँव के एक प्रतिष्ठित रेड्डी परिवार में हुआ था। वे आंध्र विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के आचार्य और अध्यक्ष थे। इन्होंने विभिन्न विषयों पर 12 ग्रंथों की रचना की है। वे एक सफल निबंधकार, आलोचक, एवं चिंतक थे। 'साहित्य और समाज' 'मेरे विचार और वैचारिकी' इनके निबंध संग्रह हैं। इनके द्वारा रचित 'हिन्दी और तेलुगुः एक तुलनात्मक अध्ययन' ग्रंथ है जो पूरे दक्षिण भारत में तुलनात्मक क्षेत्र का पहला ग्रंथ है। इस ग्रंथ में हिन्दी और तेलुगु भाषा के विशिष्ट विधाओं के साथ–साथ दोनों साहित्यों के प्रमुख कवियों का तुलनात्मक मूल्यांकन भी प्रस्तुत किया गया है। 'दक्षिण की भाषाएँ और उनका साहित्य' रेड्डी जी का एक ऐसा आलोचनात्मक ग्रंथ है जिसमें दक्षिण की चार भाषाओं के साहित्यों की संक्षिप्त आलोचना प्रस्तुत है। 'शोध और बोध' इनकी अनुसंधानात्मक तथा आलोचनात्मक लेखों का संकलन है। इसमें शोध और तुलनात्मक शोध का गंभीर विवेचन किया गया है। इन्होंने हिन्दी तथा द्रविड़ भाषाओं के समानरूपी समभिन्नार्थी शब्द ग्रंथ भी प्रकाशित किया।

डॉ चलसानि सुब्बाराव : इन्होंने सागर विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। कई वर्षों तक वे हिन्दी के प्रचार–प्रसार के कार्यो में सक्रिय रहे। 'रानी रुद्र्म्मा' इनका मौलिक नाटक है। 'हिन्दी और तेलुगु के स्वतंत्रता पूर्व ऐतिहासिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन' उनके शोध–प्रबंध का प्रकाशित रूप है।

दंडमूडि वेंकट कृष्णाराव : कृष्णाराव जी का हिन्दी गद्य शैली पर अच्छा अधिकार रहा है। उन्हें अच्छे निबंधकार, लेखक और कथाकार के रूप में जाना जाता है। 'तेलुगु के तीन महान कवि' तथा 'साहित्य कला' इनका समीक्षात्मक ग्रंथ है। 'शककर्ता शालिवाहन' इनका एक लघु ऐतिहासिक उपन्यास है। 'चित्रांगी' भारतीय इतिहास की पाँच रानियों (चित्रांगी, रूद्रम्मादेवी, संयुक्ता, पद्मिनी और नूरजहाँ) की जीवनी पर आधारित यह अत्यंत प्रभावी कहानी संकलन है।

(साभार)

वृद्धाश्रम

(टीम सोलवेदा से साभार)

कार्तिक नौ साल का था। उसके मम्मी पापा एक ही कंपनी में काम करते थे। उनके ऑफिस चले जाने के बाद वो अकेला रह जाता था, इसलिए उसका ध्यान रखने के लिए घर में एक नैनी रखी हुई थी।

कार्तिक अपने मम्मी पापा की इकलौता संतान था। इसलिए कार्तिक की हर इच्छा पूरी की जाती थी। कार्तिक के पास ढेर सारे खिलौने थें। पर नैनी और खिलौनों के साथ खेलते हुए वो ऊब चुका था। इसलिए एक दिन उसने मम्मी पापा से कहा कि, वो लोग उसे छोड़ कर, ऑफिस ना जाया करें और उसके साथ घर में ही रहें।

मम्मी पापा के लिए ऑफिस छोड़कर घर पर रहना संभव नहीं था , इसलिए उन्होंने नैनी से कहा कि वो कार्तिक को पास के ही पार्क में रोज़ घुमाने ले जाया करे। उनका कहा मानकर नैनी कार्तिक को पास के ही एक पार्क में ले गयी। शाम का वक़्त था। पार्क में बहुत सारे लोग थे।

वहां झूले लगे हुए थे, जिनपर बच्चे झूल रहे थे। कार्तिक भी उन सब बच्चों के साथ झूलने लगा। झूलते हुए एक बच्चा अचानक ही झूले से गिर गया और रोने लगा। उसको रोता देख, उसकी दादी उसके पास आई और उसे गोद में उठाकर चुप कराने लगीं। बच्चे को चुप कराने के लिए उसकी दादी ने पार्क में ही खड़े आईसक्रीम वाले से आईसक्रीम भी दिलवा दी। बच्चा चुप हो गया। नैनी ने भी कार्तिक के बिना मांगे ही उसे आईसक्रीम दिलवा दी।

कार्तिक बहुत देर से उस बच्चे और उसकी दादी को देख रहा था। वो बच्चा फिर से कार्तिक के बगल में आकर झूलने लगा।

“ये तुम्हारी नैनी हैं?” कार्तिक ने उस बच्चे से पूछा।

“नहीं वो मेरी दादी हैं...मुझे बहुत प्यार करती हैं।” उस बच्चे ने कहा और भागकर अपनी दादी के पास चला गया।

“दीदी, आपकी भी दादी हैं?” कार्तिक ने अपनी नैनी से पूछा।

“नहीं मेरी दादी तो अब इस दुनिया में नहीं रही। पर नानी है, और नानाजी भी।” नैनी ने बताया, फिर कार्तिक और नैनी घर आ गए।

रात को कार्तिक के मम्मी पापा घर आए, तो कार्तिक ने उनके सामने एक अजीब सी ज़िद रख दी। वो कहने लगा कि मुझे दादी-दादा जी, नानी और नाना जी चाहिए। उसके मम्मी पापा उसकी बात सुनकर चौंक गए।

नैनी ने बताया कि पार्क में बहुत से बच्चे अपने दादा-दादी के साथ आते हैं , उन्हें देखकर ही कार्तिक के मन में यह बात आई। कार्तिक की मांग गलत नहीं थी, पर पूरी भी नहीं हो सकती थी। क्योंकि चारों में से कोई भी अब इस दुनिया में नहीं था। और रही रिश्तेदारों की बात तो उसके मम्मी पापा दूसरे शहर में रहते और रिश्तेदार दूसरे शहर में थे। मम्मी पापा ने कार्तिक को समझाने की बहुत कोशिश की, मगर वो नहीं समझा।

उसने नैनी के साथ पार्क जाना भी बंद कर दिया, और हमेशा चुप-चुप और चिढ़ा हुआ रहने लगा।

कार्तिक की ऐसी हालत देखकर, उसके पापा को एक उपाय सूझी।

“चलो आज हम दादा जी, दादी, नानी और नाना जी, सबसे मिलेंगे।“ कार्तिक के पापा ने कहा।

कार्तिक बहुत खुश हुआ। फिर उसके मम्मी पापा उसे एक वृद्धाश्रम ले गए। कार्तिक को देखकर वृद्धाश्रम में मौजूद वृद्ध लोग बहुत खुश हुए। उन्हें कार्तिक के रूप में एक पोता मिल गया था और कार्तिक को दादा-दादी। कार्तिक सभी के साथ खूब खेलता रहा। फिर वो लोग रोज़ शाम को वृद्धाश्रम के लोगों से मिलने जाने लगे।

****

स्वच्छता को दिनचर्या में शामिल करें

* सब रोगों की एक दवाई, चारों ओर रखो सफाई
* स्वच्छ भारत है बड़ा अभियान, सब मिलकर करो योगदान
* अपना देश भी साफ हो, इसमें सबका हाथ हो
* अगर करोगे खुले में शौच, जल्दी हो जाएगी मौत
* नर हो या नारी, स्वच्छता सबकी जिम्मेदारी

संरक्षक

अरुण जातोह राठौड़

मंडल रेल प्रबंधक

मार्गदर्शन

विनय कुजूर

अपर मंडल रेल प्रबंधक

सह अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

'राजभाषा दर्पण' में प्रकाशनार्थ रचनाएं rajbhashackp@gmail.com पर ई–मेल की जा सकती हैं अथवा राजभाषा विभाग, चक्रधरपुर को भेजी जा सकती हैं।

संपादक

अश्विनी कुमार

वरिष्ठ मंडल सामग्री प्रबंधक

एवं राजभाषा अधिकारी

प्रकाशक : राजभाषा विभाग, चक्रधरपुर

फोन (रेलवे) : 72379